साहित्य दर्पण

वार्षिक साहित्यिक विवरणिका

हिन्दी विभाग

गोलाघाट कॉमर्स कॉलेज, गोलाघाट, असम

अंक : 2 वर्ष : मई 2023–2024

डॉ. जोनटि दुवरा

विभागाध्यक्षा की ओर से....

गोलाघाट वाणिज्य महाविद्यालय की हिन्दी विभाग की ओर से गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी 'साहित्य दर्पण' पत्रिका प्रकाशित करने जा रहे है। यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष की बात है। साहित्य दर्पण पत्रिका के माध्यम से हम विद्यार्थियों की साहित्य के प्रति रुचि बढ़ाना हमारा उद्देश्य रहा है।

हम सभी जानते है कि मानव समाज में रहता है और समाज में रहने के कारण उसे समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ अपने विचारों का आदान प्रदान करना पड़ता है। बिना विचार-विनिमय के उसके कार्य सुचारु रूप से नहीं चल सकते। मानव सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, उसने अपने विचारों और भावों को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा का विकास किया है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हिन्दी विभाग की विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा की विकास हेतु प्रति वर्ष साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित करने के लिए हमने निश्चित किया है।

मालोती बांगठाई
सहायक अध्यापिका

हिन्दी विभाग की ओर से साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित करने जा रहे है हमारे लिए अति हर्ष की बात है। हमने हर वर्ष साहित्य दर्पण नामक पत्रिका प्रकाशित करने का निश्चित किया है, ताकि विद्यार्थियों की साहित्य के प्रति रुझान बढ़े और साथ ही साथ उनकी हिन्दी भाषा विकास भी होता रहे।

पत्रिका प्रकाशन के लिए उत्साहित सभी विद्यार्थियों को जिन्होंने अपने अपने आलेख भेजकर प्रकाशन योग्य बनाया उन्हें विभाग की और से धन्यवाद देना चाहूँगी। इसी प्रकार साहित्य के प्रति उनकी रुचि बढ़ती रहे यही उनके भविष्य के लिए कामना करती हुँ।

अम्लानज्योति बोरा
बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

भारत के इतिहास में जातीय वीर लाचित बरफुकन का स्थान

असम के लोग तीन महान व्यक्तियों का बहुत सम्मान करते है। प्रथम श्रीमंत शंकरदेव, जो पन्द्रहवी शताब्दी में वैष्णव धर्म के महान प्रवर्तक थे। दूसरे लाचित बरफुकन जो असम के सबसे वीर सैनिक माने जाते है और तीसरे लोकप्रिय गोपीनाथ बरडोलोई, जो स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान अग्रणी नेता थे।

भारत के एक प्रतापी सेनापति वीर लाचित बरफुकन वीरता का एक उत्कृष्ठ उदाहरण है, जिन्हे दुनिया भर में सामयिक युद्ध मे एक मिल का पत्थर माना जाता है। मुगलों को परास्त कर पूर्वोत्तर को मुगलों के प्रभाव से मुक्त रखने में वीर लाचित बरफुकन का अविस्मरणीय अवदान है।

हम सब जानते ही है कि लाचित बरफुकन असम के अहोम साम्राज्य के एक सेनापति थे। जहां बड़े से बड़े राजा भी मुगलों के सामने घुटने टेक देते थे, वही इस सेनापति ने 1667 ई. में मुगल सम्राट औरंगजेब को चुनौती दे दी थी और न सिर्फ चुनौती बल्कि उसकी सेना को बुरी तरह से हराया भी था।

1671 ई. में मुगल साम्राज्य और आहोम साम्राज्य के बीच हुई उस लड़ाई को ‘‘सराईघाट का युद्ध’’ कहा जाता है। यह लड़ाई इसलिए लड़ी गयी थी, क्योंकि लाचित ने मुगलों के कब्जे से गुवाहाटी को छुड़ा कर उस पर फिर से अपना अधिकार कर लिया था। इसी गुवाहाटी को फिर से पाने के लिए मुगलों ने आहोम साम्राज्य के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया था। उनकी सेना में 30000 पैदल सैनिक, 15000 तीरंदाज, 18000 घुड़सवार, 5000 बन्धूकची और 1,000 से अधिक तोपों के अलावा नौकाओं का एक विशाल बेड़ा था, लेकिन इसके बावजूद लाचित की रणनीति के आगे उनकी एक न चली और वो हार कर वापस लौट गए।

माना जाता है की लाचित ने अपने सैनिकों को सिर्फ एक रात में एक दीवार बनवाने का जिम्मा अपने मामा को दिया था। बीमार होने के बावजूद जब लाचित उस जगह पर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि सारे सैनिक हताशा और नई राशा से भरे हुए हैं, क्योंकि उन्होंने पहले ही ये मान लिया था कि सूर्योदय से पहले वे लोग कभी दीवार का निर्माण नहीं कर पायेंगे। यह सब देखकर लाचित को अपने मामा के उपर बहुत गुस्सा आया कि वो काम करने के लिए अपने सैनिकों का उत्साह भी नहीं बढ़ा सके। इसी गुस्से में उन्होंने अपनी तलवार निकाली और एक झटके में ही अपने मामा का सिर धड़ से अलग कर दिया। बाद में उन्होंने खुद सैनिकों में इतना जोश भरा दिया की उन्होंने सूर्योदय से पहले ही दीवार खड़ी कर दी। एक सेनापति के तौर पर उन्होंने अपने सैनिकों में इसी उत्साह और जोश को बनाए रखा, जिसकी बदौलत उन्हे युद्ध में जीत हासिल हुई।

अतः इसी आहोम वीर सेनापति लाचित बरफुकन के पराक्रम और सराईघाट की लड़ाई में असमिया सेना की विजय को याद करते हुए पूरे असम में हर साल 24 नवंबर को लासित दिवस मनाया जाता है। लाचित के नाम पर ही नेशनल डिफेंस अकादमी में बेस्ट कैडेट गोल्ड मेडल भी दिया जाता है, जिसे लाचित मेडल कहा जाता है।

लाचित बरफुकन जैसे वीर नेता अपने मृत्यु के बाद भी आजीवन लोगों के हृदय में और इतिहास के पन्ने में चिर जीवित हो गये है। उनके वीरता के गुणगान आज भी प्रचलित रहते हैं। उनके वीरता के गुणगान आज भी प्रचलित रहते हैं। उनके वीरता के कविता और गान आज भी लोगों के कानों में गूँजता है। उनके अदम्य साहस आज भी नौ जवान को जीवन में कुछ काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है। वे अब नौ जवानों का साहस बन गया है। ये सिर्फ अब तक ही सीमित नहीं रहेगा, भविष्य में आने वाले पीढ़ियों को भी साहस देता रहेगा।

कुमारी प्रियाक्षी गगोई
बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

हमारा राष्ट्रभाषा हिन्दी

हिन्दी हमारा नहीं केवल राष्ट्रभाषा,
है यह हमारा राजभाषा।
अनेक जाति, अनेक भाषा
उनके बीच हमारा भाषा,
गौरब से बोले हम
हिन्दी हमारा राष्ट्र भाषा।
अगर हम अपने भाषा को
न रख पाए जिन्दा,
तो क्या महत्व रह जाएगा
इसके विशाल साहित्य का।
चुनौती है हम नौजवान को
गौरब बढ़ाए अपने
राष्ट्र भाषा की,
तभी तो सुदृढ़ होगा
राष्ट्रीय एकता की
यही बड़ा गुण है
हमारे राष्ट्र भाषा की।
ले चले हम अपने भाषा को
साथ-साथ,
अगर चलना है हमारा
भाषा का राज।

कुमारी चुमकी गोवाला
बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

पहचान खुद को

एक सपना टूट गया तो क्या?
तुझे मानना नहीं है हार,
अभी आसमा हाशिल करना है तुझे
तु बस हार मत मान,
एक नई शुरुवात, नई राह तय कर
एक रास्ता मिला नहीं तो क्या?
तुझे ढूंढना है नई राह
ये मुकाम हाशिल नहीं हुआ तो क्या?
नए ठिकाने ढूंढ ले तु
है क्या ऐसा संसार मे जो नहीं
कर सकता है तु।

कुमारी चित्रलेखा शईकिया
बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

आजादी

पंछी है कैद अगर,
तो उड़ने में कर मदत तु।
रात है काली अगर,
दिया जला कर रौशन कर तु।
बीत गए कई साल रूढ़िवादी विचारों में उलझ कर,
सुलझा मन के भाव तु।
औरत आदमी या हो कोई बच्चा,
सबके जीवन का कर सम्मान तु।
तोड़ दे दीवारे सारे,
आगे बढ़ विजय के राह पर।
उन वीरों ने क्या पाया,
अगर तु अब भी डर में खोया।
उठ जा तु छु ले आसमान,
आजादी सबका हक है।

प्रिया साहुँ
उच्चत्तर माध्यमिक द्वितीय वर्ष

बिन माँ की बेटी

जब कभी मेरा मन उदास होता,
तब तेरा चेहरा आसपास होता है,
तब मिलता है सुकुन और विश्वास,
माँ, तेरे आशीर्वाद का एहसास,
माँ की अजमत से अच्छा
जाम क्या होगा,
माँ की खिदमत से अच्छा
काम क्या होगा,
खुदा ने रख दी हों
जिस के कदमों मी जन्नत
सोचो जरा उसके सर का
मुकाम क्या होगा,
खुद से ज्यादा चाहता हूँ मैं मेरी माँ को,
खुद से ज्यादा मानता हूँ मैं
मेरी माँ को उसके रहते जीवन में,
कोई गम नहीं होता,
दुनिया साथ दे ना दे
पर माँ का प्यार कभी कम नहीं होता,
अपने बच्चों के लिए लड़ जाती है
सारे जहां से
इतनी हिम्मत ना जाने माँ में
आती है कहाँ से
यह दुख भरी कहानी उस बेटी की है,
जिसे उसकी माँ कभी मिली ही नहीं है।

दीपू बोरा
बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

सूरज निकला गगन में

सूरज निकला गगन में दूर हुआ अंधियारा,
पेड़ों ने ली अंगड़ाई, ठंडी ठंडी हवा लगाई,
पक्षियों ने भी नभ में छलांग लगाई।
हरे-भरे बागानों में रंग बिरंगे फूल खिले,
फूलों ने अजब सी महक फैलाई,
तितली, भंवरों को वो खींच लाई।
रसपान कर फूलों का सबने मौज उड़ाई,
देख प्रकृति की सुंदरता को,
कोयल भी धीमे-धीमे गुनगुनाए।
रंग बदलती प्रकृति हर पल मन को भाए,
नभ में कभी बादल तो कभी निला आसमां हो जाए,
रूप तेरा देख कर हर कोई मन मोहित हो जाए।
झील, नदियां मीठा जल पिलाएं,
पर्वत हमें ऊंचाई को चुना सिखाएं,
प्रकृति हमें सब से प्रेम करना सिखाए।
रात के अंधियारे में चांद भी अपनी कला दिखाएं,
सफेद रोशनी से प्रकृति को रोशन कर जाए,
तारे भी टिमटिमा कर नाच दिखाएं।
प्रकृति हमें रूप अनेक दिखाती,
एक दूसरे से प्रेम करना सिखाती,
यही हमें जीवन का हर रंग बतलाती।

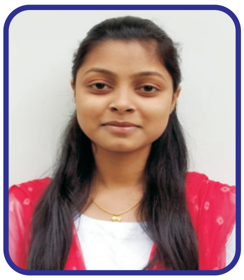

अनुस्मिता सैकिया
बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

हरी हरी खेतों में बरस रही है बुंदे

हरी हरी खेतों में बरस रही है बुंदे,
खुशी खुशी से आया है सावन,
भर गया खुशियों से मेरा आंगन।
ऐसा लग रहा है जैसे मन की कलियाँ खिल गई,
ऐसा आया है बसंत,
लेकर फूलों की महक का जश्न।
धूप से प्यासे मेरे तन को,
बूंदों ने भी ऐसी अंगड़ाई,
उछल कूद रहा है मेरा तन मन।
लगता है मैं हुँ एक दामन।
यह संसार है कितना सुंदर,
लेकिन लोग नहीं हैं उतने अकलमंद
यही है एक निवेदन,
मत करो प्रकृति का शोषण।

काजल साह
उच्चत्तर माध्यमिक द्वितीय वर्ष

कृष्णा

श्याम वर्ण पर सोहे पीताम्बर,
मुख पर मनमोहक मुस्कान,
आओ नंदलाल, आओ कान्हा,
हमें भी तो सुनाओ मुरली की तान,
हम भी गोपी बन जाये,
तेरे संग रास रचाये,
आनंद अलौकिक पाये,
हमारे लिए होगा यह स्वर्ण समान,
हे यशोदा के लाल देवकीनंदन,
जग करता तेरा वंदन,
मैं कैसे करू तेरा अभिनंदन
धन्य हो जाएगा मेरा जन्म पाकर तेरी शरण।

रिचा कुमारी
उच्चत्तर माध्यमिक द्वितीय वर्ष

जाओ ना

मुझे उदास कर रहे हो जाओ ना,
मतलब की बात कर रहे हो जाओ ना,
हार कर आये हो अपना इश्क तुम,
बहुत परेशान लग रहे हो जाओ ना,
कहाँ से आये थे मेरे दिल में तुम,
अब गैर लग रहे हो जाओ ना,
ढूंढ लो कोई नया बहाना तुम,
बदल गया हुँ मैं भी अब जाओ ना,
गिर रहे हो अपनी ही नजरो से तुम,
कुछ तो करो शर्म जाओ ना,
आँखें भीगी लग रही है क्या हुआ,
तुम भी मुझसे लग रहे हो जाओ ना,
भर गए जो थे पुराने जख्म अब,
फिर नए बना रहे हो जाओ ना,
पास कब्र के ही बैठे रहोंगे क्या,
बुला रही है जिंदगी जाओ ना।

विभागीय गतिविधियाँ

परामर्शदाता : श्रीमती जोनटि दुवरा, मालती बांगठाई   सदस्य : प्रेरणा जैसवाल, संध्या गुप्ता   अलंकरण : हिन्दी विभाग